भारत में रबी फसल की बुआई एवं संभावना

❖ संदर्भ :

- रबी फसल के मौसम की शुरुआत के साथ ही अक्टूबर महीने के उच्च तापमान के साथ-साथ डाय–अमोनियम फास्फेट (DAP) उर्वरक की कमी के कारण प्रमुख रबी फसल गेहूं, सरसों, चना और अन्य फसलों की बुआई की गति को धीमी कर दिया है।
- रबी फसल की बुआई सीजन में भारतीय किसानों ने 8 नवंबर तक लगभग 41.30 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में गेहूं की बुआई की थी, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि तक 48.87 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में गेहूं की बुआई से कम है।
- गेहूं की तरह ही 8 नवंबर तक सरसों की एवं चना की फसलों की बुआई का रकबा भी कम दर्ज किया गया है।
- हालांकि कृषि मंत्रालय द्वारा 8 नवंबर के बाद का रबी फसलों की बुआई का आंकड़ा जारी नहीं किया गया है।

❖ रबी फसल क्या है ?

- रबी फसल उत्तर भारत में अक्टूबर से नवंबर माह के बीच बोई जाने वाली प्रमुख फसलों में से एक है।
- रबी फसल की बुआई के लिए कम तापमान की आवश्यकता होती है।
- रबी फसल की कटाई फरवरी से मार्च महीने के बीच में की जाती है।

- भारत में उगाई जाने वाली प्रमुख रबी फसलों में गेहूं, चना, जौ, मसूर, अलसी, मटर, सरसों और आलू प्रमुख है।
- 'रबी' शब्द अरबी भाषा के बसंत से लिया गया है, चूंकि रबी फसल की कटाई वसंत ऋतु में होती है, इसलिए इन्हें रबी फसल कहा जाता है।
- भारत में रबी फसल के अलावा "खरीफ फसल" की बुआई की जाती है।
- रबी फसल की तुलना में खरीफ फसलों की बुआई के लिए अधिक तापमान के साथ शुष्क वातावरण की आवश्यकता होती है इसलिए इस फसल की बुआई जून–जुलाई महीने में की जाती है।
- खरीफ फसल की कटाई सितंबर–अक्टूबर महीने में की जाती है।
- भारत में बोई जाने वाली प्रमुख खरीफ फसलों में धान, ज्वार, बाजरा, मक्का, मूंग, मूंगफली, गन्ना, सोयाबीन और कपास शामिल है।

❖ रबी फसल की बुआई पिछड़ने के कारण :

- रबी फसल की बुआई अक्टूबर से मध्य नवंबर तक आलू, सरसों, चना, लहसुन, जीरा, सौंफ और धनिया फसल की बुआई के साथ शुरू होती है।
- जबकि नवंबर–दिसंबर माह के बीच गेहूं और दिसंबर–जनवरी के बीच प्याज की बुआई की जाती है।

❖ अक्टूबर माह का अधिक तापमान :

- 1991–2020 के रबी फसल के लिए उपयुक्त तापमान के आंकड़े के आधार पर इस वर्ष अक्टूबर का औसत, अधिकतम, न्यूनतम और औसत तापमान क्रमशः 0.68, 1.78 और 1.23 डिग्री सेल्सियस अधिक था।
- भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) के अनुसार इस वर्ष भारत के उत्तर–पश्चिम, मध्य और दक्षिण प्रायद्वीप में 1901 के बाद औसत न्यूनतम तापमान सबसे अधिक था।
- इस वर्ष अक्टूबर माह की अधिक तापमान के कारण जीरा सहित अन्य बीज मसालों की बुआई में देरी हुई एवं पहले से बोई गई फसल का अंकुरण अधिक गर्मी के कारण खराब हो गया।
- अधिक तापमान के कारण आलू के बीज भी ठीक से अंकुरित नहीं हो पाते हैं एवं इसमें पर्याप्त कंद भी नहीं बन पाते हैं।
- अधिक तापमान के कारण पहले बोई गई सरसों फसल को भी अंकुरण संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ा एवं उच्च तापमान के कारण अंकुरित सरसों के तने को बैक्टीरिया के संक्रमण का सामना करना पड़ा।

❖ DAP की उपलब्धता में कमी :

- 1 नवंबर 2024 के D यानि डाइऑक्साइड फास्फेट की शुरुआती स्टॉक के आंकड़े बताते हैं कि पिछले वर्ष की तुलना में DAP का स्टॉक कम था।
- अपर्याप्त DAP की उपलब्धता के कारण किसानों को गेहूं की बुआई करने में देरी हो रही है।
- DAP में 46% तक फास्फोरस होता है, जो गेहूं फसल की जड़ स्थापना और विकास के प्रारंभिक चरण के लिए आवश्यक होता है।
- किसानों को गेहूं की बुआई के लिए प्रति एकड़ 50 kg से 150 kg तक DAP की आवश्यकता होती है।

❖ रबी फसल की बुआई के लिए सकारात्मक पक्ष :

➢ मिट्टी की नमी और पानी की उपलब्धता

- इस वर्ष भारत में अधिशेष मानसून बारिश के कारण देश के प्रमुख जलाशय में जल स्तर काफी अच्छी स्थिति में है।
- 1 नवंबर के आंकड़े के अनुसार भारत में जलाशय में पूर्ण भंडारण क्षमता का 86.7 प्रतिशत जल स्तर है जबकि पिछले वर्ष या 70.5% था।
- 1 नवंबर तक के देश में जलाशयों का जलस्तर का औसत पिछले 10 वर्षों का 75.5% था।
- भारत के बांधों एवं जलाशयों में प्रचुर मात्रा में पानी का स्तर किसानों के लिए तेज रबी फसल की बुआई के लिए एक प्रोत्साहन की तरह काम करेगा।

➢ नवंबर माह का सामान्य तापमान

- भारत के अधिकांश हिस्सों में नवंबर माह का तापमान लगभग सामान्य रहा है, जो रबी फसल की बुआई के लिए अनुकूल है।
- नवंबर माह की सामान्य तापमान भारत में रबी फसल की बुआई क्षेत्र के आंकड़ों में वृद्धि ला सकता है।

➢ ला नीना घटना

- यूएस नेशनल ओशनिक एंड एटमॉस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन के अनुसार इस वर्ष ला लीना घटना दिसंबर माह के मध्य तक विकसित होगी तथा यह जनवरी–मार्च तक जारी रहेगी।
- ला नीना घटना आमतौर पर इक्वाडोर और पेरू के तटों से दूर मध्य और पूर्वी भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर के पानी का असामान्य रूप से ठंडा होने को संदर्भित करता है, जो भारत में भारी बारिश और सामान्य से अधिक ठंडी सर्दियां लाता है।

- भारत में ला लीना घटना के कारण लंबी सर्दी रबी फसल की पैदावार पर देर से बुआई के प्रभाव को बेअसर करने में मदद कर सकती है।
- खासकर गेहूं की देरी से की गई बुआई (नवंबर के मध्य तक) को मार्च तक फसल कटने के समय तक लंबी सर्दी अवधि के कारण तापमान वृद्धि के जोखिम से बचाने में मदद कर सकती है।
- भारत में ला लीना के कारण सर्दी की अवधि में वृद्धि रबी के भरपूर फसल पैदावार में मदद कर सकती है।

❖ रबी फसल और खाद्य मुद्रास्फीति का दृष्टिकोण :

- उपभोक्ता मूल्य सूचकांक के आंकड़े के अनुसार इस वर्ष अक्टूबर में खाद्य मुद्रास्फीति 10.9% और सब्जियों की 42.2 प्रतिशत थी।
- खाद्य मुद्रास्फीति के अंतर्गत सबसे अधिक चिंता गेहूं और खाद्य तेल से संबंधित है।
- 1 नवंबर तक सरकार के आंकड़े के अनुसार गेहूं का स्टॉक 222.64 लाख टन था, जो 25–30 लाख टन मासिक कमी के साथ 1 अप्रैल 2025 तक 72–98 लाख टन होगा, जो 74.6 लाख टन मानक न्यूनतम आवश्यकता के आसपास है।
- गेहूं की फसल की कम बुआई क्षेत्र एवं निम्न पैदावार की अनिश्चितता सरकार को अप्रैल 2025 में गेहूं पर मौजूदा 40% आयात शुल्क को कम करने के लिए प्रेरित कर सकता है।
- गेहूं के अलावा यही स्थिति खाद्य तेल पर भी लागू होती है।
- वर्तमान में भारत में आयातित क्रूड पाम, सूरजमुखी और सोयाबीन तेल की मौजूदा कीमत क्रमशः 1300, 1250 और 1150 अमेरिकी डॉलर प्रति टन है, जो पिछले वर्ष क्रमशः 900, 980 और 1070 अमेरिकी डॉलर प्रतिवर्ष था।
- अगर भारत में रबी फसलों के खाद्य तेल का सही पैदावार नहीं होता है, तो यह खाद्य तेलों के कीमतों को उच्च स्तर तक पहुंचा सकता है।